कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) -

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन

दिनांक

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक | | | | | |

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

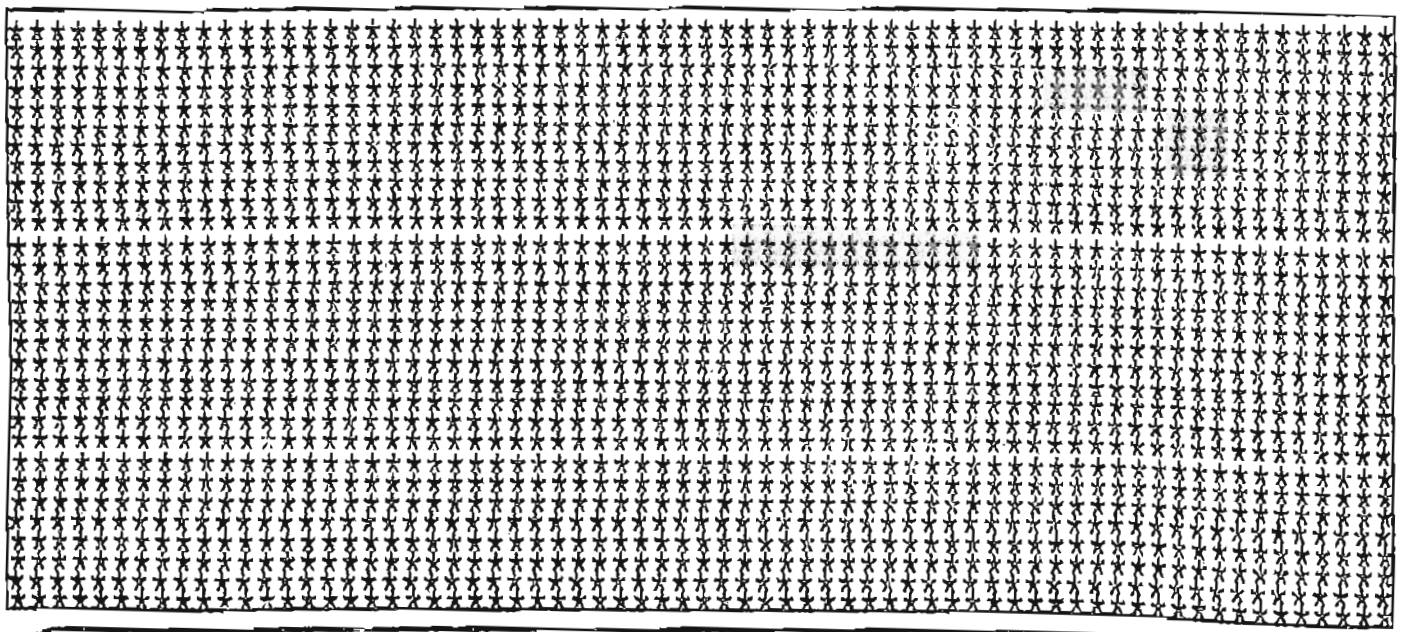

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1. तेन पुनः ---------- प्रमुखकेन्द्रम् आसीत्।

प्रसङ्ग → प्रस्तुत गद्यांश कक्षा-10 की संस्कृत की पाठ्यपुस्तक "स्पन्दना" के "महाराणा प्रतापः" शीर्षक "पाठ-6" से उद्धृत है। प्रस्तुत गद्यांश में भामाशाह की सहायता प्राप्त करने के पश्चात महाराणा प्रताप द्वारा किए गए सैन्य संगठन का वर्णन है।

हिन्दी अनुवाद → महाराणा प्रताप द्वारा भामाशाह से सहायता प्राप्त करने के बाद की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा गया है- उसने पुनः सेना के संगठन का कार्य प्रारम्भ कर दिया और बड़ी सेना की रचना की। और उस सेना से मुगल शासन के प्रति स्वतन्त्रता का युद्ध प्रारम्भ कर दिया। अपने हाथ से निकले हुए राज्य के भागों को पुनः प्राप्त कर लिया। उनमें मोही, गोगुन्दा, उदयपुर इत्यादि मुख्य थे। अपने राज्य में शान्ति की स्थापना के लिए "चावण्ड" नामक स्थान को महाराणा ने अपनी राजधानी बनाया। उस समय "चावण्ड" नगरी स्थापत्य कला, ललित कला, वाणिज्य और विद्युत विद्या का प्रमुख केन्द्र थी।

विशेष → (1) महाराणा द्वारा अपने राज्य भागों को पुनः प्राप्त कर लिया गया।
(2) "चावण्ड" नगरी के महत्व को बताया गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी →
(1) कृतवान् ⇒ कृ + क्तवतु
(2) प्रारभत ⇒ प्र + आरभ् + क्त
(3) सेनया ⇒ सेना शब्द रूप (तृतीया विभक्ति, एकवचन)
(4) इत्यादयः ⇒ इति + आदयः (यण् स्वर (अच्) संधिः)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2. वर्षागमे ---------- चकास्ति ॥

प्रसङ्ग:→ प्रस्तुत पद्यांश कक्षा-10 की संस्कृत की पाठ्यपुस्तक "स्पन्दना" के "मरुसौन्दर्यम्" शीर्षक "पाठ-12" से उद्धृत है। मूलतः इस पाठ के रचनाकार "पण्डित विद्याधर शास्त्री" महोदय हैं। प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने वर्षा कालीन मरुप्रदेश के सौन्दर्य का मनभावन वर्णन किया है।

हिन्दी अनुवाद→ मरुप्रदेश के वर्षाकालीन सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि वर्षा ऋतु आने पर सुन्दर मरु प्रदेश को छोड़कर अन्य कहाँ किसी का मन रमण करेगा अर्थात् अन्य कहीं भी नहीं। जिस मरुप्रदेश में वर्षा के समय में भी तालाबों में शरद् ऋतु के समान निर्मल जल सुशोभित होता है।

विशेष→ (1) प्रस्तुत पद्यांश में मरुप्रदेश के सौन्दर्य का वर्णन कवि द्वारा किया गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी →

~~(1) वर्षाआगमे~~

(1) वर्षागमे ⇒ वर्षा + आगमे (दीर्घ स्वर संधिः)
(2) विहाय ⇒ वि + हा + ल्यप्
(3) क्वान्यत्र ⇒ क्व + अन्यत्र (दीर्घ स्वर संधिः)
(4) कस्यापि ⇒ कस्य + अपि (दीर्घ स्वर संधिः)
(5) वर्षासमयेऽपि ⇒ वर्षासमये + अपि (पूर्वरूप स्वर संधिः)
(6) चकास्ति ⇒ चका + अस्ति (दीर्घ स्वर संधिः)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3. न जातु ---------- मम करणीयम् ॥

अन्वयः → (मम) जातु दुःखं न गणनीयम्, निजसौख्यं च न मननीयम्, कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्, मम लोकहितं करणीयम् ॥

प्रसङ्ग → प्रस्तुत पद्यांशः अस्माकं "स्पन्दना" इति संस्कृत पाठ्यपुस्तकस्य "लोकहितम् मम करणीयम्" इति शीर्षक पाठाद् उद्धृतः। मूलतः अयं पाठः "श्रीधर भास्कर वर्णेकर" महोदयेन रचितः। पद्यांशेऽस्मिन् कविः अस्माकं लोकहितं कर्तुं प्रेरयन् स्वस्य सौख्यं च न मननीयं कथयति।

व्याख्या → लोकहितं कर्तुं प्रेरयन् कविः कथयति यत् अस्माकं जातु पीड़ायाः दुखंस्यच वयम् गणनां न कर्तव्यम्। स्वस्य सुखं सुखस्य वा कृते अस्माभिः चिन्तनं न कर्त्तव्यम्। अस्माभिः कार्य क्षेत्रे शीघ्रता कर्तव्यम् तथा च लोकस्य हितम् कर्त्तव्यम्।

विशेष → (1) अंशेऽस्मिन् कविः अस्माकं लोकहितं कर्तुं प्रेरितः।

व्याकरणात्मक टिप्पणी →

(1) गणनीयम् ⇒ गण् + अनीयर्
(2) मननीयम् ⇒ मन् + अनीयर्
(3) त्वरणीयम् ⇒ त्वर् + अनीयर्
(4) करणीयम् ⇒ कृ + अनीयर्
(5) लोकहितं ⇒ लोकस्य हितम् (षष्ठी तत्पुरुष समासः)
(6) मम ⇒ अस्मद् शब्द रूप (षष्ठी विभक्तिः, एकवचनम्)
(7) कार्य-क्षेत्रे ⇒ कार्य-क्षेत्र शब्द रूप (सप्तमी विभक्तिः, एकवचनं)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

4. प्रथमा - वत्स ---------- (इति निष्क्रान्ता) ।

प्रसङ्ग → प्रस्तुत नाट्यांशः अस्माकं "स्पन्दना" इति संस्कृत पाठ्यपुस्तकस्य "नृम्भस्व सिंह ! दन्तांस्ते गणयिष्ये" इति शीर्षक नाटकात् उद्धृतः । मूलतः पाठोऽयं महाकवि कालिदास विरचितस्य विश्वविश्रुत नाटकस्य "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" "सप्तम अङ्कात्" संकलितः । नाट्यांशेऽस्मिन् बालकस्य सर्वदमनस्य व्यवहा चञ्चलतां तपास्विनीभ्याम् सह वार्तालापस्य वर्णनं अस्ति ।

व्याख्या → प्रथमा तापसी सर्वदमनं सिंहशिशुं त्यक्तुम् कथयति-
प्रथमा तापसी - पुत्र सर्वदमन ! अयं सिंहशावकं त्यज । तुभ्यम् अन्यम् क्रीडनकं प्रदास्यामि ।
बालकः - कुत्रास्ति अन्यम् क्रीडनकं ? एतत् मह्यम् देहि । (इति कथयित्वा हस्तं प्रसारयति)
द्वितीया तापसी - हे सुव्रते ! अयं बालकः वाणी मात्रेण निरोद्धुं न शक्नोति । त्वम् गच्छ, मम कुटीरे ऋषिपुत्रस्य मार्कण्डेय वर्णैः चित्रितः मृण्मयूरः अस्ति, तं मृण्मयूरं अस्य बालकस्य कृते अत्र आनयतु ।
प्रथमा तापसी - भवतु । (इति कथयित्वा ततः निष्क्रान्तः)

विशेष → (1) नाट्यांशेऽस्मिन् द्वितीया तापसी बालकस्य सर्वदमनस्य व्यवहार चञ्चलतां च वर्णितम् ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी →
(1) देह्येतत् ⇒ देहि + एतत् (यण् स्वर संधिः)
(2) वर्णैश्चित्रितः ⇒ वर्णैः चित्रितः (तृतीया तत्पुरुष सम
(3) तमस्योपहर ⇒ तम् + अस्य + उपहर
(अनुस्वार संधिः, गुण संधिः)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(4) बालमृगेन्द्रं ⇒ बालं मृगेन्द्रम् इति (कर्मधारयः समासः)
(5) मृगेन्द्रं ⇒ मृग + इन्द्रं (गुण स्वर संधिः)

(5.) (i) "जयसुरभारति!" इति पाठस्य रचयिता "डॉ. हरिरामाचार्यः" आस्ति।

(ii) "संघे शक्तिः" इति पाठानुसारेण "अद्य प्रातरेव अनिष्टदर्शनं जातम्, न जाने किम् अनभिमतं दर्शयिष्यति।" इति "लघुपतनक नामकः वायसः" कथितवान्।

(iv) महाराणा प्रतापस्य राज्याभिषेकः "गोगुन्दा" ग्रामे अभवत्।

(v) मरुप्रदेशे व्याप्त मृत्युभोजनं, बालविवाहः, नार्युत्पीडनं, यौतुकप्रथा-दीनां कुप्रथानां निवारणाय सदैव "स्वामी केशवानन्दः" सचेष्टः आसीत्।

(vi) "मरु सौन्दर्यम्" इति पाठानुसारेण "शुष्कोऽपि नित्यं सरसः सः देशः" इति "चरकेश्वरेण" प्रशंसितः।

(vii) महाराजः सूरजमल्लः "महाराजा बदनसिंहस्य" ज्येष्ठपुत्रः आसीत्।

6. का परमो धर्मः?
7. पृथिव्यां कति रत्नानि सान्ति?
8. एतेन कस्य न अपमानः?
9. केषु अन्यतमः सूरजमल्लः आसीत?

कृ. पृ. उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

10. अपि स्वर्णमयी लङ्का न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाण-खण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

11. (क) "विश्वबन्धुत्वस्य महत्वं"

(ख) (i) दैनिकव्यवहारे यः सहायतां करोति सः बन्धुः भवति।
(ii) समर्थाः देशाः असमर्थान् देशान् प्रति उपेक्षाभावं प्रदर्शयन्ति
(iii) अधुना संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् आक्ति।
(iv) प्रकृतिः सर्वेषु समत्वेन व्यवहरति।
(v) सूर्यचन्द्रयोः प्रकाशः सर्वत्र समानरूपेण प्रसरति।

(ग) (i) मानवाः
(ii) आवश्यकता
(iii) मानवाः
(iv) उपरि

12. (i) स्वागतम् ⇒ सु + आगतम् [यण् स्वर (अच्) संधिः]
(ii) दिग्गजः ⇒ दिक् + गजः [जश्त्व व्यंजन (हल्) संधिः]

13. (i) पो + अनः ⇒ पवनः [अयादि स्वर (अच्) संधिः]
(ii) रामः + च ⇒ रामश्च [सत्व विसर्ग संधिः]

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

14. (i) प्रतिवारम् ⇒ वारम् वारम् प्रति (अव्ययीभावः समासः)
(ii) महाराजः ⇒ महान् चासौ राजा (कर्मधारयः समासः)
(iii) माता च पिता च ⇒ पितरौ (एकशेष द्वन्द्वः समासः)

15. (i) ग्रामं ⇒ द्वितीया विभक्तिः ("परितः" शब्द योगे) "अभितपरितसमया..."
(ii) गीतया ⇒ तृतीया विभक्तिः ("सह" शब्द योगे) "सहयुक्तप्रधाने"
(iii) नगरात् ⇒ पञ्चमी विभक्तिः ("पृथक्" शब्द योगे) "पृथक्"

16. (i) प्रसन्नो बालकः शंकमानः।
(ii) पठन् गोपालः गच्छति।

17. (i) ज्ञानवान् ⇒ ज्ञान + मतुप्
(ii) चटका ⇒ चटक + टाप्

18. (i) सूर्यः अग्निगोलकः इव प्रतिभाति।
(ii) यत्र गच्छति तत्र तिष्ठति।
(iii) कार्यस्य सहसा निर्णयं न करणीयम्।

19. त्वया पाठः लिख्यते।
20. रामः पुस्तकं पठति।
21. अहं साधुं पश्यामि।

22. (क) सीमा प्रातः दशाधिक नववादने विद्यालयं गच्छति।
(ख) सा पुनः पञ्चाधिक त्रिवादने गृहं आगच्छति।

कृ. पृ. उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

23. (i) बालिकात्रिस्त्र प्रतिदिनम् उपवनं गच्छन्ति।
(ii) चतुष्पथे बलिवर्दाः कलहं कुर्वन्ति।
(iii) शिष्यः गुरवे निवेदयति।

25. पुनीतः – सुरेश! त्वं कुत्र गच्छसि?
सुरेशः – पुनीत! त्वम् अपि आगच्छ।
पुनीतः – अरे! तत किं भवनम् आस्ति?
सुरेशः – तत चिकित्सालयभवनम् आस्ति। आवां अपि मातुलं द्रष्टुं चलावः।
पुनीतः – सः केन रोगेण पीडितः आस्ति?
सुरेशः – सः उच्चरक्तचापेन पीडितः आस्ति।
पुनीतः – ते श्वेतप्रावारकधारकाः के सन्ति? ते किं कुर्वन्ति?
सुरेशः – ते चिकित्सकाः सन्ति। ते उपचारम् कुर्वन्ति।

26. (i) माता पुत्राय उपदिशति।
(ii) मह्यं फलानि रोचन्ते।
~~(iii)~~ (iv) कक्षाद् बहिः शिक्षकः आस्ति।
(v) तेन विना त्वं न गच्छसि।

27. (i) शीतलः (i) पवनः मन्दं मन्दं प्रवहति।
(ii) सर्वत्र सुरभितकुसुमानां सुगन्धः (ii) प्रसृतः आस्ति।
(iii) कुसुमाकरः (iii) वसन्तः समागतः आस्ति।
(iv) भारते (iv) षट् ऋतवः भवन्ति।
(v) तेष्वयं वसन्तः (v) श्रेष्ठः आस्ति।
(vi) वसन्ते (vi) उद्यानानाम् शोभा दर्शनीया भवति।

परीक्षार्थी उत्तर

पितरं प्रति पत्रं

24. जामनगरतः

दिनाङ्कः :18 मार्च 2018

परमपूजनीयेषु पितृचरणेषु (i) सादरम् प्रणतयः सन्तु । भवतां पत्रम् अधिगतम् । समाचारान् अधीत्य मे मनः (ii) भृशम् मोदतेतराम् । मईमासे (iii) अस्माकं परीक्षा सम्पत्स्यते । सम्प्रति अध्ययनकर्म (iv) सम्यक् चलति । संस्कृतव्याकरणं (v) विहाय सर्वेषु विषयेषु दक्षतामापन्नोः आस्मि । व्याकरणस्य (vi) न्यूनताम् शीघ्रमेव अपनेष्यामि । (vii) मातरम् प्रति मे सादरं प्रणतयः । (viii) अन्यत् कुशलम् ।

भवत्कः सुतः
रमेशः

(i) पुरा एकास्मिन् वने एका चटका प्रतिवसति स्म ।
(ii) कालेन तस्याः सन्ततिः जाताः ।
(iii) एकदा काश्चित् प्रमत्तः गजः तत्र आगतवान् ।
(iv) वृक्षस्य अधः आगत्य तस्य शाखां शुण्डेन अत्रोटयत् ।
(v) चटकायाः नीडं भुवि अपतत्, तेन अण्डानि विशीर्णानि ।
(vi) अथ सा चटका व्यलपत् ।

"समाप्तः"